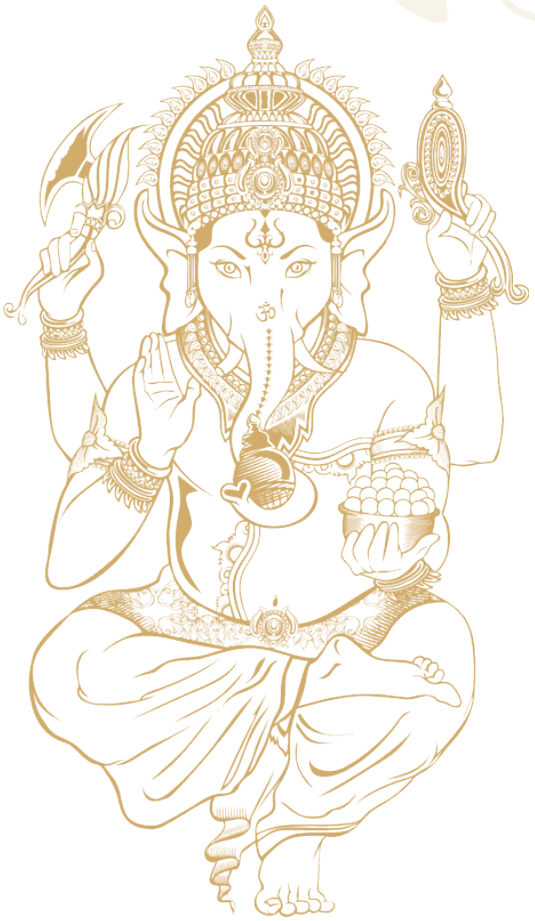

Mr. Chetan Prakash

27 Apr 2025

10:16 AM

Meerut

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120116301**

तिथि 27/04/2025 **समय** 10:16:00 **वार** रविवार **स्थान** Meerut **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:39
अक्षांश 29:01:00 उत्तर **रेखांश** 77:45:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:00 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:18:43 घं
वेलान्तर	00:02:22 घं
सूर्योदय	05:41:27 घं
सूर्यास्त	18:52:18 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	अश्विनी
योग	प्रीति
करण	चतुष्पाद

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चे-चेतन
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	शनि
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

केतु 4वर्ष 9मा 17दि

केतु

27/04/2025
12/02/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	27/04/2025
चन्द्र	16/08/2025
मंगल	13/01/2026
राहु	31/01/2027
गुरु	07/01/2028
शनि	15/02/2029
बुध	12/02/2030

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 8मा 27दि

भ्रामरी

27/04/2025
23/01/2028

	00/00/0000
	27/04/2025
उल्का	23/09/2025
सिद्धा	04/07/2026
संकटा	25/05/2027
मंगला	04/07/2027
पिंगला	23/09/2027
धान्या	23/01/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:18:14	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			12:58:21	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	उच्च राशि	2.28	भ्रातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			04:11:47	मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	सम राशि	1.12	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			09:39:45	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	नीच राशि	1.05	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध			16:23:42	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	नीच राशि	1.00	अमात्य	ज्ञाति	मित्र
गुरु			26:24:19	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	1.17	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			03:58:59	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	उच्च राशि	1.05	ज्ञाति	कलत्र	मित्र
शनि			03:14:46	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.15	कलत्र	आयु	वध
राहु	व		02:38:06	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		02:38:06	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

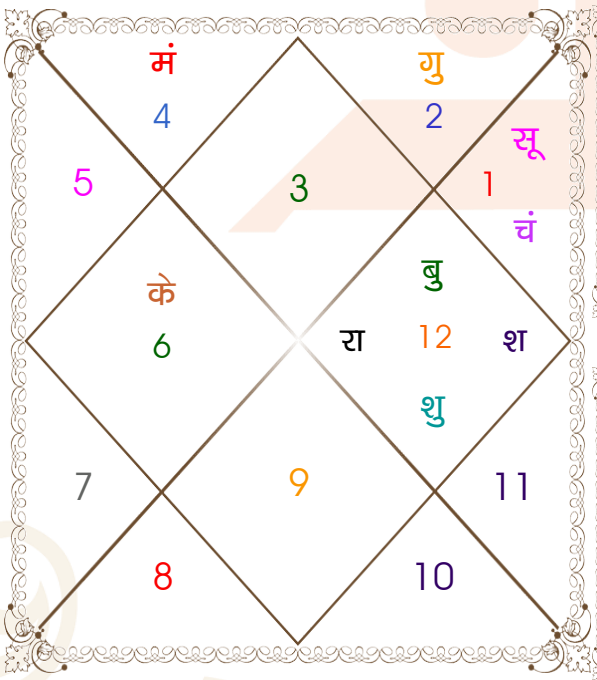

चन्द्र कुंडली

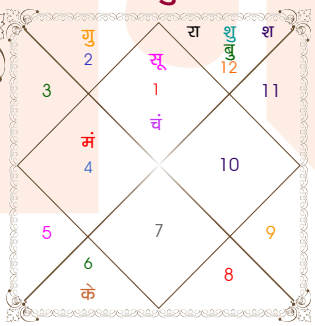

नवमांश कुंडली

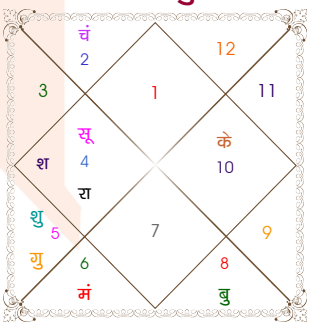

सर्वाष्टकवर्ग

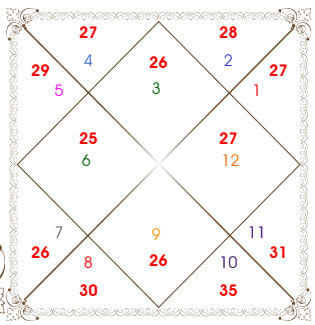

दशमांश कुंडली

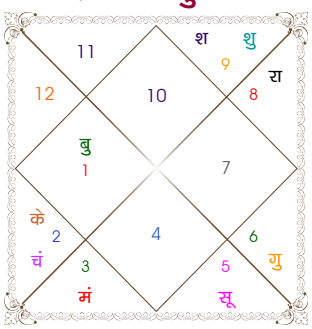

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशिस्वामी मंगल होगा। आपकी अश्वयोनि, देवगण आद्यनाडी तथा सिँह वर्ग होगा। द्वितीय चरण में पैदा होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "चे" होगा यथा चेतराम।

अश्विनी नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अन्तर्गत की जाती है। यद्यपि द्वितीय चरण में उत्पन्न जातकों को इसका दोष अल्प मात्रा में होता है। अतः जन्मसमय में इसकी शान्ति अवश्य करवा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 2800 जप करवाने चाहिए तथा शान्ति के दिन दशाँश का हवन करवाना चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होगी। यह कार्य योग्य आचार्य द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

मंत्र – ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रकृति श्रृंगार प्रिय होगी तथा आभूषणों से विशेष लगाव रहेगा। आप देखने में अत्यन्त रूपवान होंगे तथा कार्य शैली चतुराई एवं बुद्धिमता पूर्ण ढंग की होगी जिसे देख कर लोग अनायास ही आपकी तरफ आकर्षित होंगे। साथ ही आप सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे। आपके विनयशील व्यवहार से सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार आपका यश दूर दूर तक फैलेगा। जीवन में अधिकांशतः आप सुख एवं आनन्द की अनुभूति करेंगे तथा धन एवं अन्य भौतिक सुखों का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

आप हमेशा सत्य का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। बाल्यकाल से ही दूसरों के प्रति सेवा भाव से भी आपका अन्तर्मन ओत प्रोत रहेगा। सभी सांसारिक भौतिक सुख सुविधाएं आपको प्राप्त होंगी। आप भाग्यवान पुरूष होंगे क्योंकि आप एक सुशील पत्नी के पति तथा सदगुणों से युक्त पुत्रों के पिता होंगे। जो नित्य आपके यश की अभिबृद्धि करेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने दैनिक अथवा व्यापारिक कार्यों में अत्यन्त व्यस्त रहेंगे। इससे आपके शरीर तथा उचित खानपान की उपेक्षा होगी जिससे शरीर में मोटापा आ सकता है। आप अपने परिश्रम तथा कौशल से धनार्जन करेंगे तथा अपने सद्व्यवहार से जनता के विभिन्न वर्गों में समान लोकप्रियता को प्राप्त करने में सफल होंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी मेष राशि है अतः आप कम भोजन करने वाले होंगे। आप अपने माता पिता की इकलौती सन्तान हो सकते हैं। तथा अन्य भाई बहन होने पर आप ही सर्वश्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका वर्ण ताम्र के समान गौर वर्ण से युक्त होगा तथा गोलाकार नेत्रों में लाली होगी। आपके सिर पर चोट या घाव का निशान हो सकता है। भविष्य में आप गंजे भी हो सकते हैं। आपके हाथ तथा पैर कोमल कान्ति से सुशोभित होंगे। जल से भयभीत होना आप का स्वाभाविक गुण होगा। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों का डटकर प्रतिरोध करेंगे। सामाजिक मान सम्मान आपको स्वतः प्राप्त होगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप सम्मान से अधिक प्राथमिकता देंगे। जिससे आप कभी-कभी अपने लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे। आप बहुत से मित्रों के मित्र तथा सहयोगियों के शुभचिन्तक होंगे। आपके पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। सभी से स्नेह करना आपकी प्रवृति का एक मुख्य अंग होगा। अपनी इसी प्रवृति के कारण समाज के विशिष्ट तथा सामान्य दोनों वर्गों से आप सहानुभूति तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप उन लोगों में से होंगे जो शीघ्र ही क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। आपका स्वभाव भ्रमण प्रिय होगा तथा अगम्य स्थान अर्थात जहाँ आसानी से न पहुँचा जा सके उसकी सैर आपको विशेष प्रिय होगी। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। महिला वर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय समझे जाएंगे। दूसरे लोगों की सेवा तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे चाहे आप स्वयं परेशानी का सामना ही क्यों न कर रहे होंगे।

वृतातास्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक प्राथमिकता देना तथा महिला वर्ग की तरफ विशेष आकर्षित होना आप के इस स्वभाव से आपके सम्मानीय बुजुर्ग तथा संबंधीगण असन्तुष्ट रहेंगे। जिससे उनका आपसे या आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आप अपनी पत्नी के कहे अनुसार ही अधिकांश कार्य सम्पन्न करेंगे तथा स्वविवेक से कम ही करेंगे। इससे भी संबधियों तथा बुजुर्गों से तनाव बढ़ सकता है। धनार्जन आप अपने बाहुबल तथा बुद्धिबल से स्वयं करेंगे तथा धन एवं पुत्र से युक्त होकर समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण आपके सामाजिक अथवा व्यापारिक संबध विस्तृत होंगे अतः मौका पड़ने पर आप मांस मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थो का उपभोग भी करेंगे।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी-कभी उग्रता की झलक देखने को मिलेगी। इस उग्रता से आप परेशानियों में भी फंस सकते हैं। चंचल प्रवृति होने के कारण यदा कदा आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

आप यौगिक क्रियाओं के प्रति भी श्रद्धा रखेंगे। आयु के साथ-साथ बाल भी कम हो सकते हैं अर्थात् खल्वाट योग बनता है। पित्तकारक या गर्मी प्रदान करने वाले पदार्थो की यथाशक्ति उपेक्षा करें गर्मी के प्रभाव से मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरुषोऽयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप देवगण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी वाणी मधुर तथा सच बोलने वाली होगी। वाणी के द्वारा कभी भी अन्य लोग आपसे किसी भी प्रकार कोई कष्ट नहीं पाएंगे। आप प्रतिभाशाली होंगे तथा सब कुछ आसानी से आत्मसात करने की प्रतिभा आप में विद्यमान रहेगी। शुद्ध सात्विक एवं अल्प भोजन करना आपका मन पसन्द कार्य होगा। गुणों के आप ज्ञाता होंगे तथा विद्वान एवं महान लोगों ने जिन गुणों का वर्णन किया है उन समस्त गुणों से आप युक्त रहेंगे। वैभव तथा ऐश्वर्य का आप कभी भी अभाव प्रतीत नहीं करेंगे क्योंकि आप अपार धन एवं सम्पत्ति के स्वामी होंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर सुन्दर और स्वस्थ होगा। दान देना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोग तथा संस्थाएं आपकी हृदय से आभारी रहेंगे। आप सादगी

पसन्द व्यक्ति होंगे। छल, कपट तथा प्रपंच का नाम मात्र का भी आपके अन्दर समावेश नहीं होगा। तथा विद्वान योग्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्व योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वछन्दता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा स्वतंत्रतापूर्वक विना किसी रोक टोक या सलाह के आपको कार्य करना अच्छा लगेगा। सद्गुण आपके अन्दर नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेंगे एवं साहस तथा बहादुरी का अभाव नहीं होगा। प्रत्येक कार्य को अपने साहस और बाहुबल से सम्पन्न करने में आप समर्थ रहेंगे। जिससे समाज में यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। आप जहाँ भी कार्य करेंगे आप पर पूरा विश्वास किया जायेगा।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में

आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी (1,6.11) शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा हमेशा आपके लिए अनिष्ट फलदायी रहेगा। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 दोनों पक्षों की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, लेन-देन, साझेदारी आदि महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें। कार्य पूर्ण नहीं होंगे तथा अशुभ फल मिलेंगे। इसके अतिरिक्त मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बव करण, रविवार तथा प्रथम प्रहर एवं जब चन्द्रमा मेष राशि में स्थित हो तब भी शुभ कार्यों को न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। उपरोक्त महीने, दिन तिथि, वार तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए।

जब समय आपके लिए प्रतिकूल चल रहा हो अर्थात आपको मानसिक कष्ट हो रहा हो अथवा व्यवसाय में लगातार हानि हो रही हो या हानि होने की संभावना लग रही हो उस समय आपको अपने इष्ट हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए! तथा सोना, ताँबा, गुङ, घी, रक्त कनेर के फूलों का दान करना चाहिए। साथ ही मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। एतदतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव भी शनैः शनैः न्यून होता जाएगा।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।